P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-II * Issue-VII* December- 2015

नयी कविता की शिल्प चेतना और रघुवीर सहाय की काव्यभाषा

सत्यप्रकाश सेन
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बून्दी, राजस्थान

सारांश

रघुवीर सहाय नयी कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है। उन्होंने नयी कविता को वैचारिक और सैद्धांतिक स्तर पर आधार प्रदान किया। उन्होंने कविता के अनुभूति और संवेदनात्मक पक्ष को जागरूक और जिम्मेदार नागरिक की भांति सामाजिक यथार्थ से दूर नही होने दिया। काव्य सृजन में सामाजिक वास्तविकताओं को अधिक महत्व दिया है। उनका कहा है कि कोशिश तो यही रही है कि सामाजिक यथार्थ के प्रति अधिक से अधिक जागरूक रहा जाय और वैज्ञानिक तरीक़े से समाज को समझा जाये। वास्तविकताओं की ओर ऐसा ही दृष्टिकोण रहना चाहिए और यही जीवन को स्वस्थ बनाये रख सकता है। उन्होंने कविता के शिल्प पक्ष को कहीं भी बनावटी नही होने दिया है। उनकी काव्य भाषा व्यंजकता, सपाटबयानी, बिम्बात्मकता, नाटकीयता और विसंगति व विडम्बना से सुसज्जित है। **रघुवीर सहाय** काव्य शिल्प को लेकर अधिक व्यग्र नही, सहज कवि है। शिल्पगत कलाबाजी में उनका विश्वास नही था। उनकी काव्यभाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने काव्यभाषा के उपकरणों–बिम्ब, प्रतीक आदि का कम से कम प्रयोग किया है। उन्होंने काव्य भाषा को साधारण बोलचाल के निकट लाने का प्रयास किया है। इसके बावजूद भी रघुवीर सहाय ने बोलचाल की भाषा को जो तरलता व व्यंजकता प्रदान की है, वह उनकी काव्यभाषा की सबसे बड़ी ताकत मानी जा सकती है। ऊपरी तौर पर रघुवीर सहाय की काव्य पंक्तियाँ सामान्य व कुछ उलझी हुई सी दिखाई पड़ती है लेकिन जब थोड़ी गम्भीरता से उसके परिवेश को ध्यान में रखकर देखा जाता है तो कविता के अर्थ गाम्भीर्य का वास्तविक स्वरूप स्वतः ही ज्ञात हो जाता है।

मुख्य शब्द : नयी कविता, शिल्प, संवेदना, भाषा, काव्य भाषा, बिम्ब, सपाटबयानी, नाटकीयता, विसंगति, विडम्बना

प्रस्तावना

नयी कविता शिल्पगत नवीनता और प्रयागों के लिए हिन्दी कविता के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कवियों में बदलती संवेदना के लिए नवीन शिल्प के अन्वेषण का प्रबल आग्रह दिखाई देता है। कवियों को परम्परागत शिल्प अपूर्ण और अपर्याप्त लग रहा था। ये उपमान मैले हो गये हैं, देवता इन प्रतीकों के कर गये हैं कूच जैसे वक्तत्व नयी कविता की शिल्प चेतना के प्रतीक कहे जा सकते हैं। नयी कविता ने भाषा और शिल्पगत नवीनता को लेकर लोक जीवन और सामान्य बोल–चाल की भाषा को काव्यात्मक गरिमा प्रदान की है। दैनिक जीवन की भाषा ही नयी कविता की भाषा है। **रघुवीर सहाय** काव्य शिल्प को लेकर अधिक व्यग्र नही, सहज कवि है। शिल्पगत कलाबाजी में उनका विश्वास नही था। उनकी काव्यभाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने काव्यभाषा के उपकरणों–बिम्ब, प्रतीक आदि का कम से कम प्रयोग किया है। उन्होंने काव्य भाषा को साधारण बोलचाल के निकट लाने का प्रयास किया है। इसके बावजूद भी रघुवीर सहाय ने बोलचाल की भाषा को जो तरलता व व्यंजकता प्रदान की है, वह उनकी काव्यभाषा की सबसे बड़ी ताकत मानी जा सकती है। ऊपरी तौर पर रघुवीर सहाय की काव्य पंक्तियाँ सामान्य व कुछ उलझी हुई सी दिखाई पड़ती है लेकिन जब थोड़ी गम्भीरता से उसके परिवेश को ध्यान में रखकर देखा जाता है तो कविता के अर्थ गाम्भीर्य का वास्तविक स्वरूप ज्ञात होता है। इस संबंध में अशोक सेक्सरिया का मत है कि –''रघुवीर सहाय की कविता का अर्थात् देर से समझ आये तो हम अपने को मन्दबुद्धि न मानें, यह मानें कि सब ने जो समझा वह शब्दों से समझा लेकिन हमने तब समझा जब वह कविता बनी।''[1] रघुवीर सहाय की काव्य विशिष्टता व्यंजकता, सपाटबयानी, बिम्बात्मकता, नाटकीयता और विसंगति व विडम्बना से सुसज्जित है। रघुवीर सहाय ने डिस्चार्ज बोलचाल के शब्दों को चार्ज करके नयी अर्थवत्ता से सम्पन्न किया है।

सपाटबयानी

सपाटबयानी का अर्थ है सीधे–सीधे कहना। सपाटबयानी बोलचाल की भाषा को काव्यभाषा में परिणत करके आविष्कृत किया जाने वाला कवि सुलभ मुहावरा है। रघुवीर सहाय ने भाषा को कलावाद के अतिरिक्त आग्रहों से मुक्त करने के लिए भाषा में वे सपाटबयानी का भरपूर प्रयोग किया है। सपाटबयानी को काव्यभाषा का आवश्यक गुण मानते है। नामवर सिंह ने लिखा है'' कविता में सपाटबयानी का यह आग्रह वस्तुतः गद्य सुलभ जीवन्त वाक्य विन्यास को पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयास है : जिसके मार्ग में बिम्बवादी रूझान निश्चित रूप में बाधक रहा है।''[2] सातवें दशक में प्रकाशित 'आत्महत्या के विरूद्ध' काव्य संग्रह की कविता 'एक अधेड़ भारतीय आत्मा' में रघुवीर सहाय की सपाट बयानी कुछ ऐसी है ''जिसको आगे चलकर राजकाज करना है/दाँत माँज रखता है मुस्काने के लिए/मुस्कराकर प्राध्यापक–परिषद् में मुझे आँख मारी गृहमंत्री ने/कहते तुम ठीक हो चुप रहो।/और मेरे साथ बेईमानी में शरीक हो/संघ रहे संघ रहे उसने कहा भारत का।/चाहे हर भारतीय हर भारतीय का गुलाम रहे।''[3] उपर्युक्त पंक्तियों में न बिम्ब है, न प्रतीक और अप्रस्तुत है और कविता की भाषा भी बोलचाल की गद्यात्मक भाषा है। लेकिन सरल सी दिखने वाली इन गद्यात्मक पंक्तियों में नाटकीयता और तनाव के कारण भारतीय जनतंत्र में सत्ता की जन उपेक्षा की विडम्बना को मूर्त किया है। गृहमंत्री का बेईमानी में शामिल करने का प्रयास नेताओं के दुहरे चरित्र को प्रभावी ढंग से उजागर कर रहा है। रघुवीर सहाय की विशेषता रही है कि वे बात को सरलता से प्रकट न करके स्थिति की पेचीदगी से परिचित कराते हैं और स्थिति में छिपी विडम्बना को उसकी भयावहता में सशक्त रूप से चित्रित करते है –''कुछ होगा कुछ होगा अगर मैं बोलूँगा/न टूटे न टूटे तिलिस्म सता का मेरे अन्दर एक कायर टूटेगा/टूट मेरे मन टूट एक बार सही तरह अच्छी तरह टूट/मत झूठमूठ अब मत रूठ मत डूब सिर्फ टूट।''[4] प्रस्तुत कविता के बारे में नामवर सिंह का मत है कि ''आत्महत्या के विरूद्ध की लय में मद मन्थरता नहीं, बल्कि आवेश में हाँफते हुए स्वर की त्वरा है इसलिए एक वाक्य जैसे दूसरे वाक्य के अन्दर घुसा हुआ तीसरे वाक्य को आगे की ओर धक्का देता सा प्रतीत होता है। आविष्ट लय का यह प्रवाह कविता की इन पंक्तियों के अर्थ से जुड़ा हुआ है।..... जो शुद्ध वक्तृव्य गुण के द्वारा कविता के मूल अर्थ को सम्प्रेषित कर देता है।''[5]

बिम्बात्मकता

रघुवीर सहाय ने अपनी काव्य भाषा में प्रसंगानुकूल बिम्बों का सार्थक प्रयोग किया है। उनकी कविता में चित्र–बिम्ब द्वारा काव्यार्थ की प्रभावी अभिव्यक्ति हुई है– ''उजड़ी डालों के अस्थिजाल से छन कर भू पर गिरी धूप/लहलही फुनगियों के छात्रों पर ठहर गयी अब/ऐसा हरा–रूपहला जादू बन कर जैसे/नीड़ बसे पंछी को लगने वाला टोना।''[6] उपर्युक्त चित्र–बिम्ब रंग मिश्रित दृश्य चित्र को एक अन्य चित्र नीड़ बसे पंछी को लगने वाले टोना की संभावना को संवेद्य रूप में प्रकट कर रहा है। रघुवीर सहाय ने स्थिर और गतिशील चित्र को अपने बिम्ब प्रयोग द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया है –''दूर क्षितिज पर महुओं की दीवार खड़ी है/जिस पर चढ़कर सूरज का शैतान छोकरा/झांक रहा है।''[7] रघुवीर सहाय ने सूरज के लिए नवीन अप्रस्तुत का प्रयोग किया है। रघवीर सहाय ने गतिबोधक बिम्ब के अन्तर्गत मासपेशियों के तनाव और स्थिति के प्रति जागरुकता को प्रकट किया है –''निकल गली से तब हत्यारा/आया उसने नाम पुकारा/हाथ तोलकर चाकू मारा/छूटा लहू का फव्वारा/कहा नहीं था उसने, आखिर उसकी हत्या होगी।''[8] प्रस्तुत कविता में पयुक्त बिम्ब हत्या के दृश्य को मूर्त रूप देते हुए मन को झकझोर कर रख देता है और मन में आक्रोश उत्पन्न करता है।

खण्डित बिम्ब योजना

रघुवीर सहाय के 'सीढ़ियों पर धूप में' काव्य संग्रह की 'रूमाल'[9], 'पढ़िये गीता'[10] : आज फिर शुरू हुआ जीवन''[11] शीर्षक कविताओं तथा ''आत्महत्या के विरूद्ध संग्रह की भीड़ में मैकू और मैं''[12] तथा 'शराब के बाद का सवेरा'[13] शीर्षक कविताओं में असमान चित्रों एवं विवरणों के माध्यम से वर्तमान समाज की विसंगतियों और व्यंग्य विडम्बना का उद्घाटन किया है। 'प्रभु की दया' शोर्षक कविता में खण्डित बिम्ब का स्वरूप इस प्रकार है –''बिल्ली रास्ता काट जाया करती है/प्यारी–प्यारी औरतें हरदम बक–बक करती रहती हैं/चाँदनी रात को मैदान में खुले मवेशी/आ कर चरते रहते हैं/और प्रभु यह तुम्हारी दया नहीं तो और क्या है ?/कि इन में आपस में कोई सम्बन्ध नहीं।''[14] प्रस्तुत कविता में बिल्ली, औरतों और मवेशियों में कोई आपसी सम्बन्ध नहीं हैं परन्तु कवि ने असम्बद्ध चित्रों और विपर्यय के द्वारा उस व्यंग्यपूर्ण अर्थ को प्रकट किया है जो औरतों की बक–बक और प्रभु की दया में छिपा है।

व्यंग्यधर्मिता

रघुवीर सहाय की कविता में व्यंग्य का भरपूर प्रयोग हुआ है। कवि ने अपने तीक्ष्ण व्यंग्य के माध्यम से अपनी काव्य भाषा को अतिशय समृद्ध बनाया है। व्यंग्यात्मक भाषा में अपनी कविता में कवि कहता है –''क्यों कलाकार को नहीं दिखाई देती अब/गंदगी और गुलामी से पैदा ?/आतंक कहाँ जा छिपा भागकर जीवन से/जो कविता की पीड़ा में अब दिख नहीं रहा ?''[15] रघुवीर सहाय ने 'सभी लुजलुजे हैं' शीर्षक कविता में परस्पर विरोधी स्थितियों को आमने सामने रखकर व्यंग्य को तीव्रता प्रदान की है –''सभी लुजलुजे हैं/मोल तोल करते हैं, हिचकिचाते हैं, मुकर जाते हैं/ऐंठते हैं, बिछ जाते हैं, तपाक से मिलते हैं, कतरा जाते हैं,/बीड़ा उठाते हैं, बरा जाते हैं, सभी लुजलुजे हैं,/गिजगिज हैं, गिलगिल है।''[16] रघुवीर सहाय ने अपने देश की भीतरी ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आतंक फैलाने वाली शक्तियों की निमर्मता पर गहरा व्यंग्य किया है –''तुमने मार डाले लोग, हा हा हा,/क्योंकि वे हँसे थे, क्योंकि वे सुस्त पड़े थे/क्योंकि उनमें जीवन की आस नहीं थी/तुमने मार डाले लोग, हा हा हा।''[17] 'आमार सोनार दिल्ली' शीर्षक कविता में व्यंग्य (पीड़ा) को स्वर देते हुए रघुवीर सहाय कहते है –''यही कि मैं शिशु सहित माँ के/साथ हूँ, साथ हूँ, साथ हूँ, बशर्ते कि बलात्कार से माँ/और बन्दूक से बच्चा अपने को बचा ले।''[18] रघुवीर सहाय ने अपनी कविता में सत्ताधारी नेताओं के स्वार्थी तथा भ्रष्टाचारी रूप को लक्ष्य कर बड़े पैने व्यंग्य किये हैं जो उनकी काव्यभाषा को अत्यधिक शक्ति सम्पन्न बनाते हैं। हिन्दी

गद्य में हरिशंकर परसाई का व्यंग्य जिस प्रकार तिलमिलाकर रख देता है उसी प्रकार रघुवीर सहाय के काव्य में प्रयुक्त व्यंग्य के दंश से व्यक्ति कचकचाकर रह जाता है परन्तु मरता नहीं है।

विसंगति और विडम्बना

यूनानी शब्द 'आइरनी' का समानार्थक हिन्दी शब्द विडम्बना है जिसका कार्य मूल अर्थ बोध को छिपाकर अन्य अर्थ को प्रकट करना होता है। यह व्यंग्य का अधिक विकसित रूप है जिसमें वक्रता का महत्त्व अधिक होता है। विल्सन ओ वलाऊ नामक अंग्रेज विद्वान के अनुसार ''विडम्बना एक प्रकार की अन्योक्ति है – जिसमें सोचा कुछ जाता है और कहा कुछ जाता है ..... विरोध वैषम्य एवं अर्थापति के माध्यम से विड़म्बना का उद्घाटन होता है। विडम्बना प्रायः व्यंग्य और उपहास की सीमाओं का स्पर्श करती हैं और प्रचलित या स्वीकृत मान्यताओं का उपहास करती है।''[19] रघुवीर सहाय ने आयरनी का उपयोग जीवन में विसंगतियों का सामना करने के लिए किया है। प्रस्तुत कविता वर्तमान समय की विडम्बना पूर्ण स्थिति का अहसास कराती है :– ''हँसों पर चुटकुलों से बचो/उनमें शब्द हैं/कहीं उनमें अर्थ न हों जो किसी ने सौ/साल पहले दिये हों।/बेहतर है कि जब कोई बात करो तब हँसो/ताकि किसी बात का कोई मतलब न रहे/जो कि अनिवार्य हो/जैसे गरीब पर किसी ताकतवर की मार/जहाँ कोई कुछ कर नहीं सकता/उस गरीब के सिवाय/और वह भी अक्सर हँसता है''[20] आज के मनुष्य की विडम्बना पूर्ण स्थिति का ही परिणाम है कि जीवन में काय को अपने चिन्तन के अनुरूप परिणत नहीं किया जाता है। लोग सत्य को जानकर भी अनजान बने रहते हैं। अपने समय की सच्चाइयों की समूची विडम्बना और अन्तर्विरोधों को महसूस करते हुए रघुवीर सहाय कहते हैं – ''मुझे कुछ और करना है पर मैं कुछ और कर रहा हूँ/मुझे कुछ और करना था इस अधूरे समाज में मुझे/कुछ करना था मकान मालिक के वायदे के अलावा कुछ/और मुझे करना था/इस ठसाठस भरे कमरे में हाथ में तश्तरी लिए/खड़े–खड़े खाते रहने के अतिरिक्त–रिक्त तश्तरी के/अतिरिक्त तोड़ना था मुझे/बहुत कुछ इसी वर्ष पर मैं बना रहा हूँ सीसे के सामने/हजामत।''[21] प्रस्तुत कविता में कवि ने यथार्थ जीवन की विडम्बना को सार्थक करते हुए भाषा की सम्प्रेषणता में वृद्धि करने का प्रयत्न किया है।

नाटकीयता

नाटकीयता आधुनिक भाषा का एक महत्त्वपूर्ण गुण है। रचनाकार की भाषा नाटकीय तब होती है जब व्यंग्य का पुट, सत्ता के प्रति आक्रोश, असन्तोष की भावना मन में होती है। रघुवीर सहाय की काव्यभाषा में नाटकीयता का गुण सन्निहित है। यह नाटकीय तनाव रघुवीर सहाय की भाषा की अद्भुत शक्ति है। उनकी कविताओं में प्रत्येक शब्द बोलचाल का है किन्तु उस शब्द के पीछे जिस तनाव को संकेतित किया गया है, वह परिवेश की त्रासद स्थिति का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है और परिवेश के बदलाव को भी प्रकाश में लाता है। रमेश चन्द्र शाह का मत है कि ''समकालीन यथार्थ के बीचों बीच अपनी कविता को प्रतिष्ठित करने के लिए रघुवीर सहाय ने अपनी भाषा में नाटकीय गुणों का समावेश किया है। उनकी कविताओं में यह नाटकीयता आयी है– वास्तविक घटनाओं, यहाँ तक कि प्रचलित नामों और संस्थाओं के व्यंजनात्मक उपयोग द्वारा, औसत मानसिकता में आसानी से उभर सकने वाली सामयिक हलचलों – सनसनीखेज के भी समावेश द्वारा, औसत आदमी की मुद्राओं, उत्तेजनाओं– यहाँ तक कि उसकी 'वल्गैरिटीज' के भी निस्संकोच उपयोग द्वारा।''[22] इसी कारण अज्ञेय ने रघुवीर सहाय की भाषा को 'सहज प्रवाहमान भाषा' कहा है[23] रघुवीर सहाय की कविताओं की भाषा ऊपरी तौर पर बहुत सीधी–सादी लगती है पर उसकी ताकत का पता उसमें निहित अनुभव के नाटकीय तनाव से पता चलता है – ''एक दिन/चिड़चिड़े बच्चों के लिए दवाखाने में खड़े–खड़े/मुझे एकाएक लगा मैं अधेड़ हो गया/न गलाबन्द कोट, न दुपट्टा, न टोपी/मैं बड़ा हुआ हा हा हू हू करता हुआ।''[24] प्रस्तुत कविता में चिड़चिड बच्चों के लिए अधेड़ होने की प्रक्रिया को 'गलाबंद कोट', 'दुपट्टा' और 'टोपी' के साथ जोड़कर जिन भाव दशाओं की ओर संकेत किया गया है उसके मूल में मध्यमवर्गीय जीवन के निरर्थक और विद्रूप होते जाने का दुःख है, ऊपर से वह बनावटीपन के लिए हा हा हू हू करत हुए बड़ा होने की बात कहकर व्यंग्य और तनाव का एक साथ अनुभव करा देता है। इसी प्रकार निम्न मध्यमवर्गीय स्त्री के जीवन की विद्रूप परिस्थितियों को उजागर करने के लिए रघुवीर सहाय ने बोलचाल के अतिसाधारण शब्दों में कुछ विशिष्ट नाटकीयता का प्रयोग किया है – ''एक औरत दो बच्चे, एक गोद एक पैदल/पता पूछती रहती है प्रधानमंत्री का/दस बरस बेदख़ल हुए उसे पाँच अधपागल''[25] प्रस्तुत कविता ऊपरी तौर पर सामान्य दिखायी पड़ती है जिसमें औरत और बच्चे किसी विशिष्ट अर्थ की अपेक्षा नहीं रखते। परन्तु रघुवीर सहाय ने अपनी नाटकीय प्रतिभा के बल पर औरत व दो बच्चों की स्थिति, गोद व पैदल के द्वारा विशेष तनाव उत्पन्न कर दिया है। 'बेदखल' और 'अधपागल' शब्द औरत के सम्पूर्ण जीवन की विद्रूपता को बड़ी गम्भीरता से प्रकट करते हैं।

लोकोक्ति व मुहावरे

लोकोक्ति व मुहावरों के प्रयोग से काव्यभाषा सजीव हो उठती है। भाषा में नई रवानगी व निखार आ जाता है। लोकोक्ति व मुहावरों का प्रयोग न केवल भाव सौन्दर्य में अभिवृद्धि करता है अपितु भाषा की अभिव्यंजना क्षमता की मारकता को भी बढ़ाता है। रघुवीर सहाय ने अपने काव्य में पुराने घिसे–पिटे मुहावरों को नई अर्थवत्ता दी है और जहाँ भी इनका प्रयोग किया है वहाँ ही भाषा भावाभिव्यक्ति में प्रभावी बन पड़ी है। रघुवीर सहाय की काव्य भाषा में प्रयुक्त मुहावरों का प्रयोग इस प्रकार है – 1. ''ठीक वक्त पर चीं बोल जाते हैं/सभी लुजलुजे हैं, थुलथुल हैं, लिबलिब हैं।''[26]/2. ''दोनों, बाप मिस्तरी और बीस बरस का नरेन/दोनों पहले से जानते हैं पेंच की मरी हुई चुड़ियाँ''[27]/3. उसको सब विख्यात जनों का कच्चा चिट्ठा मालूम है।/4. उसे सुनता है पर निन्दा नहीं किसी की करता है।[28]''वह चला गया युवक/ हाथ में लिये बुरूश/ 5. भेद खोलता हुआ।''[29]''मैं चिथड़े चिथड़े हो गया हूँ/यही मेरी पहचान है।''[30]/6. ''आपने नाक, अपनी कटा दी चुप रह गये/यह क्रान्तिकारी परम्परा के विरूद्ध कार्य है।''[31] 7. ''पढ़े लिखे लोगों का, जब दिल बहलाता है/खून किसी और का।''[32] प्रस्तुत उदाहरणों में प्रयुक्त 'ची' बोलना, ''पेच की चुड़ी मरना'', ''कच्चा चिट्ठा'',

'भेद खोलना', 'चिथड़े चिथड़े होना',, 'नाक कटाना' और 'दिल बहलाना' आदि मुहावरों का सार्थक प्रयोग कवि ने किया है। इसी प्रकार लोकोक्ति से सम्बन्धित उदाहरण है –1. ऐ नीम हकीम खतरएजान बख्शिए मुझे/ये अललटप खूटाके मत दीजिए मुझे।[33] /2. मूर्ख–मूर्ख सब हो गये मेरी ओर, छोड़कर कायरता,/लिख दिया गया स्कूलों में सुभाषित/ मरता क्या न करता।[34] 3. तब गजब का सफेद कुरता पहने हुए/ बोला उपप्रधानमंत्री लेखक सभा में/हममें से हर एक कपड़ों के नीचे तो नंगा है।''[35] प्रस्तुत उदाहरणों में प्रयुक्त लोकोक्तियाँ 'नीम हकीम खतरएजान', 'मरता क्या न करता' और 'हर एक कपड़ों के नीचे तो नंगा है' द्वारा रघुवीर सहाय ने कथ्य की भावाभिव्यंजना को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया है। रघुवीर सहाय की काव्य भाषा के विभिन्न गुणों से अवगत होने के पश्चात् कहा जा सकता है कि इनकी भाषा ने परम्परागत भाषिक स्वरूप की क्लिष्टता को दूर करते हुए जो ''भाषा कोरे वादों से वायदों से भ्रष्ट हो चुकी है सबकी'' उसके लिए ''न सही यह कविता यह मेरे हाथ की छटपटाहट सही''[36] कहते हुए साधारण बोलचाल के निकट लाने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष

रघुवीर सहाय की काव्य भाषा का समग्रतः अध्ययन करने के उपरान्त निष्कर्षात्मक रूप में कहा जा सकता है कि 'भाषा को साधारण बोलचाल के निकट लाने' की बात कहने वाले रघुवीर सहाय ने अपने काव्य में इस कथन को पूर्णतः चरितार्थ किया है। साथ ही भाषागत उपकरणों के परम्परागत अभिजात्य को तोड़ते हुए भाषा की सम्प्रेषणीयता में पर्याप्त वृद्धि की है। रघुवीर सहाय ने प्रबंध अथवा लम्बी रचना नहीं की पर उनकी छोटी–छोटी कविताओं में जीवन का इतना विस्तार और वैविध्य छिपा है कि महाकाव्यात्मक साहित्य के गुण हमारे समक्ष उद्भूत दिखायी पड़ते हैं। कवि ने मनुष्य और मनुष्य, मनुष्य और प्रकृत्ति मनुष्य और समाज, प्रशासन तथा राजनैतिक परिवेश की कारगुजारियों को अपनी नंगी और बेलौस भाषा में पूरी ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त किया है। इस कार्य हेतु कवि ने जीवन के विविध क्षेत्रा से आवश्यक शब्दावली को ग्रहण कर अपने शब्द भण्डार को पर्याप्त समृद्ध किया है। लखनऊ में पले बढ़े होने के कारण रघुवीर सहाय की काव्य भाषा में उर्दू शब्दों का सहज प्रयोग इनकी कविता में रोमानी प्रभाव उत्पन्न करता है। साथ ही लोकोक्ति व मुहावरों के प्रयोग द्वारा सम्प्रेषण किया है। यहीं नहीं उन्होंने अखबार की भाषा से राजनीति लेकर उसे कविता में मूर्तित किया है। अखबार स्वभावतः बोलचाल और दैनिक जीवन से जुड़ा होता है और वहीं से कवि ने अपने अनुभव हेतु भाषा ग्रहण कर उसे अपनी काव्य प्रतिभा के बल पर सशक्त बनाया है। भाषा के घिसे–पिटे शब्दों में नवीन अर्थवत्ता उत्पन्न कर देना कवि का स्वभाव रहा है। रघुवीर सहाय की काव्यभाषा की विशिष्टता के बारे में रमेशचन्द्र शाह का कहना है कि ''रघुवीर सहाय की काव्यभाषा इस मानें में अलग पड़ जाती है कि वह बिम्ब और लय के जाने–पहचाने उपकरणों से स्वतंत्र, उनके अतिरिक्त भी सर्जनात्मकता का एक धरातल पा लेती है। मात्र इस दृष्टि से भी यह कहना कोई अत्युक्ति नहीं है कि उन्होंने हिन्दी में सामाजिक राजनीतिक काव्य को फिर से – बल्कि सचमुच अब जाकर–संभव बनाया है।''[37] रघुवीर सहाय भाषा की मुक्ति क समर्थक हैं वे उसको बरतने पर जोर देते हैं अन्त में उन्हीं के शब्दों में– ''वापस ले जाओ मुझे एक बार उस दिन/जब मैंने कहा था कि भाषा को/मंदिर में बन्द मत करो/ उसे बोलो।''[38]

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. रघुवीर सहाय– लेख–लज्जा का बोध करवा सकने वाला कवि लो. अशोक सेक्सरिया, स.विष्णु नागर, असद जैदी, पृ.29।
2. कविता के नये प्रतिमान, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली चतुर्थ सं. 1990 पुनरावृत्ति 1997 पृ.134–135।
3. रघुवीर सहायः आत्महत्या के विरूद्ध, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली तीसरा सं. 2009 पृ. 94–95।
4. रघुवीर सहायः आत्महत्या के विरूद्ध, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली तीसरा सं. 2009 पृ.29।
5. कविता के नये प्रतिमान, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली चतुर्थ सं. 1990 पुनरावृत्ति 1997 पृ.154–155।
6. दूसरा सप्तक, सं. अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ, लोदी रोड नयी दिल्ली छठा सं. 1996 पृ. 140।
7. दूसरा सप्तक, सं. अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ, लोदी रोड नयी दिल्ली छठा सं. 1996 पृ.152।
8. रघुवीर सहायः हँसों हँसो जल्दी हँसो : नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली प्रथम सं. 1975 पृ.27।
9. रघुवीर सहाय (सं. अज्ञेय): सीढ़ियों पर धूप में, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम सं. 1960 पृ.114।
10. रघुवीर सहाय (सं. अज्ञेय): सीढ़ियों पर धूप में, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम सं. 1960 पृ.115।
11. रघुवीर सहाय (सं. अज्ञेय): सीढ़ियों पर धूप में, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम सं. 1960 पृ.129।
12. रघुवीर सहायः आत्महत्या के विरूद्ध, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली तीसरा सं. 2009 पृ.54।
13. रघुवीर सहायः आत्महत्या के विरूद्ध, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली तीसरा सं. 2009 पृ.60।
14. रघुवीर सहाय (सं. अज्ञेय): सीढ़ियों पर धूप में, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम सं. 1960य, पृ.113।
15. कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ, रघुवीर सहाय, पृ.13–14।
16. रघुवीर सहाय (सं. अज्ञेय): सीढ़ियों पर धूप में, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम सं. 1960 पृ.108।
17. रघुवीर सहायः हँसों हँसो जल्दी हँसो : नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली प्रथम सं. 1975 पृ.1।
18. रघुवीर सहायः हँसों हँसो जल्दी हँसो : नषनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली प्रथम सं. 1975 पृ.63
19. विलियम वैन ओ, कॉनर, सेन्स एंड सेन्सिबिलिटी इन मॉडर्न पोयट्री, पृ.128–129, 138।
20. रघुवीर सहायः हँसों हँसो जल्दी हँसो : नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली प्रथम सं. 1975 पृ.25, 26।
21. रघुवीर सहायः हँसों हँसो जल्दी हँसो : नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली प्रथम सं. 1975 पृ.29।
22. 'समानान्तर', रमेशचन्द्र शाह, पृ.89।

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-II * Issue-VII* December- 2015

23. रघुवीर सहाय (सं. अज्ञेय): सीढ़ियों पर धूप में, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम सं. 1960 भूमिका, अज्ञेय पृ.9।
24. रघुवीर सहायः आत्महत्या के विरूद्ध, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली तीसरा सं. 2009 पृ.90।
25. रघुवीर सहायः आत्महत्या के विरूद्ध, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली तीसरा सं. 2009 पृ.76।
26. रघुवीर सहाय (सं. अज्ञेय): सीढ़ियों पर धूप में, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम सं. 1960 पृ.108।
27. रघुवीर सहायः आत्महत्या के विरूद्ध, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली तीसरा सं. 2009 पृ.30।
28. रघुवीर सहायः हँसों हँसो जल्दी हँसो : नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली प्रथम सं. 1975 पृ.15।
29. रघुवीर सहाय : लोग भूल गये है, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली तीसरी आवृत्ति 2002पृ.20।
30. रघुवीर सहाय : लोग भूल गये है, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली तीसरी आवृत्ति 2002पृ.74।
31. रघुवीर सहाय : लोग भूल गये है, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली तीसरी आवृत्ति 2002पृ.87।
32. रघुवीर सहाय : लोग भूल गये है, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली तीसरी आवृत्ति 2002पृ.100।
33. रघुवीर सहाय (सं. अज्ञेय): सीढ़ियों पर धूप में, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम सं. 1960 पृ.118।
34. रघुवीर सहायः आत्महत्या के विरूद्ध, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली तीसरा सं. 2009 पृ.35।
35. रघुवीर सहायः आत्महत्या के विरूद्ध, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली तीसरा सं. 2009 पृ.77।
36. रघुवीर सहायः आत्महत्या के विरूद्ध, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली तीसरा सं. 2009 पृ.84।
37. विवेचना संकलन, भाग–3, पृ.264।
38. रघुवीर सहायः आत्महत्या के विरूद्ध, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली तीसरा सं. 2009 पृ.93।